Shikshan Sanshodhan : Journal of Arts, Humanities and Social Sciences **ISSN: 2581-6241** **Volume - 3, Issue - 5, Sept-Oct – 2020**
Bi-Monthly, Peer-Reviewed, Refereed, Indexed Journal **Impact Factor: 3.589**
Received on : 02/09/2020 **Accepted on : 22/09/2020** **Publication Date: 30/09/2020**

स्वच्छता और महात्मा गाँधी

डॉ. अजिता कुमारी
असिस्टेंट प्रोफेसर, समाजशास्त्र विभाग
डॉ.श्यामा प्रसाद मुखर्जी विश्वविद्यालय, राँची, झारखण्ड
Email ; ajitasrivastava14@gmail.com

शोध सारांश: “स्वतंत्रता से ज्यादा महत्वपूर्ण है स्वच्छता – महात्मा गाँधीश: बापू के उक्त कथन से यह ध्वनित होता है कि वह जीवन में स्वच्छता के कितने बड़े हिमायती थे। सबसे बड़ी बात यह है कि वह सिर्फ बाहरी स्वच्छता यानी घर, पास–पड़ोस आदि के ही पक्षधर नहीं थे” बल्कि मन की स्वच्छता के भी प्रबल पक्षधर थे। उनका यह मानना था कि यदि मन और पड़ोस स्वच्छ नहीं होगा, तो अच्छे, सच्चे एवं ईमानदार विचार आना असंभव है। आंतरिक स्वच्छता को वह वाह्य स्वच्छता के लिए आवश्यक मानते थे। अपने इस दृष्टिकोण का उन्होंने एक पत्र में इस प्रकार रेखांकित किया–वह जो सचमुच में भीतर से स्वच्छ है, वह अस्वच्छ बनकर नहीं रह सकता। एक सुन्दर, पवित्र, समरस और बुराइयों से मुक्त समाज के निर्माण के लिए बापू के स्वच्छता दर्शन से श्रेष्ठ कोई अन्य दर्शन नहीं हो सकता।

आंतरिक स्वच्छता की महत्ता को बापू ने 10 दिसंबर, 1925 के यंग इंडिया के अंक में कुछ इस प्रकार रेखांकित किया था श्आंतरिक स्वच्छता पहली वस्तु है, जिसे पढ़ाया जाना चाहिए, अन्य बातें प्रथम और सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण पाठ सम्पन्न होने के बाद लागू की जानी चाहिए। वह मानव प्रगति के लिए आंतरिक और बाहरी स्वच्छता को आवश्यक मानते थे। उन्होंने स्वच्छता को आत्मविकास एवं राष्ट्रविकास का सबसे महत्वपूर्ण अवयव माना और इसे इस प्रकार स्पष्ट किया –श्एक पवित्र आत्मा के लिए एक स्वच्छ शरीर में रहना उतना ही महत्वपूर्ण है, जितना कि किसी स्थान, शहर, राज्य और देश के लिए स्वच्छ रहना जरूरी होता है, ताकि इसमें रहने वाले लोग स्वच्छ और ईमानदार हों।श्स्वच्छता का उनका दर्शन अत्यंत व्यापक था। इस व्यापकता को उन्होंने यह कह कर व्यक्त किया कि यदि कोई व्यक्ति स्वच्छ नहीं है, तो वह स्वस्थ नहीं रह सकता है। और यदि वह स्वस्थ नहीं है, तो वह स्वस्थ मनोदशा के साथ नहीं रह पाएगा। स्वस्थ मनोदशा से ही स्वस्थ चरित्र का विकास होगा।

विशिष्ट शब्द – महात्मा गाँधी, स्वच्छता ।

१ भूमिका :

राष्ट्रपिता, बापू या मोहनदास करमचंद गाँधी भारत ही नहीं विश्व के चुनिंदें महान व्यक्ति के श्रेणी में आतें हैं। अहिंसा के मार्ग पर चलकर भारत को आजाद कराने वाले इस महात्मा ने इतिहास की दिशा बदल दी और नए इतिहास का सृजन किया। सत्य, शांति, अहिंसा, ईमानदारी के प्रति अडिग रहने के कारण अपनी क्षीण काया व सादगी के बावजूद पूरी दुनिया के लिए एक श्रोल माडल बन गए। जहाँ उनके व्यक्तित्व में सरलता थी, वहीं वे उच्च कोटि के जटिल व कुटील राजनीतिज्ञ व सामाजिक विचारक थे। गाँधीजी का चिंतन सैद्धांतिक नहीं था, बल्कि यथार्थ के धरातल पर आधारित था। उनके लिए सिद्धांत और व्यवहार में कोई विरोधाभास नहीं था और ना ही वह सार्वजनिक व व्यक्तिगत जीवन में कोई विभेद करते थे। सत्य को अपनाकर उन्होनें शोषित व वंचितों के बंद जुबान के पीछे के दर्द को समझा, इसलिए वे जन–जन के हमदर्द बन गए। उन्होंने भारत की प्राचीन परंपरा, संस्कृति तथा मूल्यों को व्यवहारिक रुप प्रदान किया। गाँधीजी ने जिन मूल्यों व विचारों का प्रतिपादन किया, वे शाश्वत हैं।

“स्वतंत्रता से ज्यादा महत्वपूर्ण है स्वच्छता – महात्मा गाँधी, बापू के उक्त कथन से यह ध्वनित होता है कि वह जीवन में स्वच्छता के कितने बड़े हिमायती थे। सबसे बड़ी बात यह है कि वह सिर्फ बाहरी स्वच्छता यानी घर, पास–पड़ोस आदि के ही पक्षधर नहीं थे, बल्कि मन की स्वच्छता के भी प्रबल पक्षधर थे। उनका यह मानना था कि यदि मन और पड़ोस स्वच्छ नहीं होगा, तो अच्छे, सच्चे एवं ईमानदार विचार आना असंभव है। आंतरिक स्वच्छता को वह वाह्य स्वच्छता के लिए आवश्यक मानते थे। अपने इस दृष्टिकोण का उन्होंने एक पत्र में इस प्रकार रेखांकित किया–श्वह जो सचमुच में भीतर से स्वच्छ है, वह अस्वच्छ बनकर नहीं रह सकता।श एक सुन्दर, पवित्र, समरस और बुराइयों से मुक्त समाज के निर्माण के लिए बापू के स्वच्छता दर्शन से श्रेष्ठ कोई अन्य दर्शन नहीं हो सकता।

आंतरिक स्वच्छता की महत्ता को बापू ने 10 दिसंबर, 1925 के यंग इंडिया के अंक में कुछ इस प्रकार रेखांकित किया था "आंतरिक स्वच्छता पहली वस्तु है, जिसे पढ़ाया जाना चाहिए, अन्य बातें प्रथम और सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण पाठ सम्पन्न होने के बाद लागू की जानी चाहिए।" वह मानव प्रगति के लिए आंतरिक और बाहरी स्वच्छता को आवश्यक मानते थे। उन्होंने स्वच्छता को आत्मविकास एवं राष्ट्रविकास का सबसे महत्वपूर्ण अवयव माना और इसे इस प्रकार स्पष्ट किया – एक पवित्र आत्मा के लिए एक स्वच्छ शरीर में रहना उतना ही महत्वपूर्ण है, जितना कि किसी स्थान, शहर, राज्य और देश के लिए स्वच्छ रहना जरूरी होता है, ताकि इसमें रहने वाले लोग स्वच्छ और ईमानदार हों।श्स्वच्छता का उनका दर्शन अत्यंत व्यापक था। इस व्यापकता को उन्होंने यह कह कर व्यक्त किया कि यदि कोई व्यक्ति स्वच्छ नहीं है, तो वह स्वस्थ नहीं रह सकता है। और यदि वह स्वस्थ नहीं है, तो वह स्वस्थ मनोदशा के साथ नहीं रह पाएगा। स्वस्थ मनोदशा से ही स्वस्थ चरित्र का विकास होगा।

उद्देश्य – प्रस्तुत शोध उद्देश्य स्वच्छता पर गाँधी के विचारों का अध्ययन करना।

शोध प्रविधि – प्रस्तुत शोध आलेख विश्लेषणात्मक एवं वर्णात्मक प्रकृति का है। शोध कार्य के लिए द्वितीयक स्रोतों से प्राप्त आँकड़े, तथ्य और जानकारियों का प्रयोग किया गया है।

२ स्वच्छता पर गाँधी के विचार:

अठारहवीं और उन्नीसवीं सदी के दौरान, यूरोप और अमरीका में इतनी गंदगी फैली थी कि उस समय के मिश्नरियों के प्रचार को "स्वच्छता का सिद्धांत" कहा गया। इस सिद्धांत के मुताबिक गंदगी की तुलना पाप से की गई है, जबकि स्वच्छता एक व्यक्ति को परमेश्वर के करीब लाती है। स्वच्छता कोई कार्य नहीं है अपितु एक अच्छी आदत है जिसे हमें अच्छे स्वास्थ्य और स्वस्थ जीवन के लिए अपनाना चाहिए। दूसरे शब्दों में हम यह कह सकते हैं कि स्वच्छता एक सामाजिक प्रक्रिया है जिसमें मनुष्य पर्यावरण के साथ एक अच्छा संबंध बनाता है। स्वच्छ रखना या स्वच्छता कोई कठिन कार्य नहीं है लेकिन हमें इसे सुव्यवस्थित तरीके से करना चाहिए। ये हमें मानसिक, शारीरिक, सामाजिक और बौद्धिक रूप से स्वस्थ रखता है। स्वच्छता एक अच्छी आदत है जो हम सभी के लिये बहुत जरूरी है। अपने घर, पालतू जानवर, अपने आसपास पर्यावरण, तालाब, नदी, स्कूल आदि सहित सबको साफ रखते हैं। हमें स्वच्छता पर पूरा ध्यान रखना चाहिए। ये समाज में अच्छे व्यक्तित्व और प्रभाव को बनाने में मदद करता है। स्वच्छता हमें मानसिक, शारीरिक, सामाजिक और बौद्धिक हर तरीके से स्वस्थ बनाता है जो हमारे व्यक्तित्व के लिए बहुत ही आवश्यक है। अपने भविष्य को चमकदार और स्वस्थ बनाने के लिए हमें हमेशा खुद का और अपने आसपास के पर्यावरण का ख्याल रखना चाहिए। हर अभिभावक को तार्किक स्वच्छता के उद्देष्य, फायदे और जरूरत आदि के बारे में अपने बच्चों से बात करनी चाहिए। उन्हें जरूर बताना चाहिए कि स्वच्छता हमारे जीवन में खाने और पीने की तरह पहली प्राथमिकता है। ज्यादातर भारतीयों के पास मोबाईल फोन तो है लेकिन घर में शौचालय नहीं है। यह लोगों की स्वच्छता के प्रति जागरूकता, समाज और प्राचलिकता को द्रशाता है। आज देश भर में 2 अक्टूबर को गाँधी जयंती मनाया जाता है। देश के प्रधानमंत्री विश्व स्तर पर देश की स्वच्छता के लिए संबोधित करते हैं।

गाँधी जी ने अपने बचपन में ही भारतीयों में स्वच्छता के प्रति उदासीनता के कमी को महसूस कर लिया था। उन्होंने किसी भी सभ्य और विकसित मानव समाज के लिए स्वच्छता के उच्च मानदंड की आवश्यकता को समझा। उनमें यह समझ पश्चिमी समाज में उनके पारंपरिक मेल–जोल और अनुभव से विकसित हुई। अपने दक्षिण अफ्रीका के दिनों से लेकर भारत तक अपने पूरे जीवनकाल में निरंतर बिना थके स्वच्छता के प्रति लोगों को जागरूक करते रहे। गाँधीजी के लिए स्वच्छता एक बहुत ही महत्वपूर्ण सामाजिक मुद्दा था। 1895 में जब ब्रिटिश सरकार ने दक्षिण अफ्रीका में भारतीयों और एशियाई व्यापारियों से उनके स्थानों को गंदा रखने के आधार पर भेदभाव किया था तब से लेकर अपनी हत्या के एक दिन पहले 20 जनवरी 1948 तक गाँधीजी लगतार सफाई रखने पर ज़ोर देते रहे।

जो परिवर्तन आप दूनिया में देखना चाहते हैं वह सबसे पहले अपने आप में लागू करें–

– महात्मा गाँधी

महात्मा गाँधी द्वारा कहे गये यह कथन जो स्वच्छता पर आधारित है उनके अनुसार स्वच्छता की जागरूकता की मशाल सभी में पैदा होना चाहिए। इसके तहत स्कूलों में भी स्वच्छ भारत अभियान के कार्य होने लगे हैं। दिलचस्प बात यह है कि पहली बार गाँधी जी ने स्वच्छता के मसले को दक्षिण अफ्रीका में भारतीय व्यापारियों को अपने–अपने व्यापार के स्थानों को साफ रखने के संबंध में उठाया था। भारतीय और एशियाई समुदाय की ओर से एक याचिकाकर्ता के रूप में दक्षिण अफ्रीका में दी गई याचिका में गाँधी जी ने भारतीय व्यापारियों की स्वच्छता के प्रति उनके रवैये और व्यवहार का

बचाव किया और उन्होंने सभी समुदायों से सफाई रखने के लिए लगातार अपील की थी। लार्ड रिपन स्वच्छता मामले में एक मुद्दे को एक याचिका में इस प्रकार उठाया गया था। 1881 के सम्मेलन का 14वाँ खण्ड जो मूल निवासियों के साथ–साथ सभी व्यक्तियों के हितों की समान रक्षा करता है। उसमें कहा गया था कि ट्रांसवाल में भारतीय स्वच्छता का पालन नहीं करते हैं और यह कुछ लोगों द्वारा गलत धारणा के आधार पर बनाया गया था।

गाँधी जी यह धारणा बनाना चाहते थे कि भारतीयों को व्यापार के लिए इसलिए लाइसेंस नहीं दिया जा रहा क्योंकि वह अंग्रेजों को व्यापार में कड़ी टक्कर दे रहे थे। दूसरी ओर उन्होंने यह भी तर्क दिया कि भारतीय व्यापारी सफाई के आदी होते हैं। उन्होंने म्यूनिसिपल डाक्टर वियेले का उदाहरण दिया जिन्होंने भारतीयों को सफाई के प्रति सचेत और जागरूक बताया था। डाक्टर वियेले ने धूल और गंदगी से होने वाले बीमारियों से मुक्त बताया था भारतीयों को।

३ भारत में स्वच्छता, गाँधीजी के प्रयास:

भारत में गाँधी जी ने गाँव की स्वच्छता के संदर्भ में सार्वजनिक रूप से पहला भाषण 14 फरवरी 1916 में मिशनरी सम्मेलन के दौरान दिया था। उन्होंने वहाँ कहा था ष्देशी भाषाओं के माध्यम से शिक्षा की सभी शाखाओं में जो निर्देष दिये गये हैं, मैं स्पष्ट कहूँगा कि उन्हें आश्चर्यजनक रूप से समूह कहा जा सकता है" गाँधी जी ने स्कूल शिक्षा में स्वच्छता को एक पाठ्य के रूप में जोड़ने पर काफी ज़ोर दिया था। 20 मार्च 1916 को गुरूकुल कांगड़ी में गाँधी जी ने भाषण दिया था। उसमें उन्होंने कहा था–ष्गुरूकुल के बच्चों के लिए स्वच्छता और सफाई के नियमों के ज्ञान के साथ ही उनका पालन करना भी प्रशिक्षण का एक अभिन्न हिस्सा होना चाहिए।" गाँधी जी ने नील की खेती करने वाले किसानों की समस्या को सुलझाने के लिए चंपारण गए थे। जाँच दल के रूप में तैनात एक गोपनीय पत्र में उन्होंने उस स्थिति में स्वच्छता की महत्व को बताया। गाँधीजी चाहते थे कि अंग्रेज प्रशासन उनके कार्यकर्ताओं को स्वीकारें ताकि वे समाज में शिक्षा और सफाई के कार्यों को भी शुरू कर सकें। इस बारे में उन्होंने कहा क्योंकि वे गाँवों में ही रहते हैं तो वे गाँव के बच्चों को स्वच्छता और सफाई के बारे में सिखा सकते हैं इससे भविष्य में देश स्वच्छता के मामले में आगे रहेगा।"

1920 ई॰ में गाँधीजी ने गुजरात विद्यापीठ की स्थापना की। यह विद्यापीठ आश्रम की जीवन पद्धति पर आधारित था। इसलिए वहाँ शिक्षकों, छात्रों और अन्य स्वयं सेवकों को शुरू से ही स्वच्छता कार्यों में लगाया जाता था। यहाँ की रिहायशी क्वार्टरों, गलियों, कार्यालयों, कार्यस्थलों और परिसरों की सफाई दिनचर्या का एक हिस्सा थी।

अगर लोग गाँधी जी के साथ रहने की इच्छा जाहिर करते तो उनकी पहली शर्त होती कि आश्रम में रहने वाले लोगों को आश्रम की सफाई का काम करना होगा जिसमें शौच का निस्तारण करना भी शामिल है। गाँधी जी ने रेलवे के तीसरे श्रेणी के डब्बे में बैठकर देश भर का व्यापक दौरा किया था। उन्होंने देखा था कि तीसरी श्रेणी के डब्बे में भी काफी गंदगी थी। वे इसे देखकर स्तब्ध और भयभीत थे। उन्होंने समाचार पत्रों को लिखे पत्र के माध्यम से इस ओर सबका ध्यान आकृष्ट किया था। 25 सितंबर 1917 को लिखे अपने पत्र में उन्होंने लिखा इस तरह की संकट की स्थिति में तो यात्री परिवहन को बंद कर देना चाहिए लेकिन जिस तरह की गंदगी और स्थिति इन डिब्बों में है उन्हें जारी नहीं रहने दिया जा सकता क्योंकि वह हमारे स्वास्थ्य और नैतिकता को प्रभावित करती है। तीसरे दर्जे के यात्री की उपेक्षा कर हम लाखों लोगों को व्यवस्था स्वच्छता, शालीन जीवन की शिक्षा देने, सादगी और स्वच्छता की आदतें विकसित करने की बेहतरीन मौका गँवा रहे हैं।" गाँधी जी मानते थे कि नगरपालिका का सबसे महत्वपूर्ण कार्य सफाई रखना है। उन्होंने कांग्रेस के कार्यकर्ताओं को पार्षद बनने के बाद स्वच्छता के काम करने का सुझाव दिया।

संदर्भ– (कांग्रेस सम्मेलनों के दौरान गाँधी जी के भाषण, गाँधी वाड्म्य, भाग–23, पृष्ठ–15, 357/भाग 25)

25 अगस्त 1925 को कोलकाता में दिए गये भाषण में उन्होंने कहा कि कार्यकर्ता लोगों के बीच धर्मगुरू या नेता बनकर न आयें बल्कि अपने हाथ में झाड़ू लेकर आयें। गंदगी, गरीबी, निठल्लापन जैसी बुराईयों का सामना करना होगा और उससे झाड़ू कुनैन की गोली के साथ लड़ना होगा। संदर्भ–गाँधी वाड्म्य, भाग–28, पृष्ठ–129)

पंचायतों की भूमिका के बारे में गाँधी जी ने कहा था कि गाँव में रहने वाले प्रत्येक बच्चे, पुरूष् या स्त्री की प्राथमिक शिक्षा के लिए घर–घर में चरखा पहुँचाने के लिए, संगठित रूप से सफाई और स्वच्छता के लिए पंचायत जिम्मेदार होनी चाहिए। 19 नवंबर 1925 के यंग इंडिया के एक अंक में गाँधी जी ने भारत में स्वच्छता के बारे में अपने विचारों को लिखा देश के अपने भ्रमण के दौरान मुझे सबसे ज्यादा तकलीफ गंदगी को देखकर हुई इस संबंध में अपने आप से समझौता करना मेरी मजबूरी है। संदर्भ– गाँधी वाड्म्य, भाग–28, पृष्ठ–461)

गाँधी जी को अस्पृश्यता से घृणा थी। बचपन में कम उम्र में ही उन्होंने अपनी माँ का विरोध इस बात पर किया था कि वह सफाई करने वाले को न छुए और इससे दूर रहे। उन्हें दृढ़ विश्वास था कि स्वच्छता और सफाई प्रत्येक व्यक्ति का

काम है। वह हाथ से मैला ढोने और किसी एक जाति के लोगों द्वारा ही सफाई करने की प्रथा को समाप्त करना चाहते थे। उन्होंने भारतीय समाज में सदियों से मौजूद अस्पृश्यता की कुरीति और जातीय प्रथा का विरोध किया। सफाई करने वाले जाति के लोगों को गाँवों से बाहर रखा जाता था और उनकी बस्तियाँ बहुत ही खराब, मलीन और गंदगी से भरी हुई थी। गाँधी जी ने भारतीय समाज में सफाई करने और मैला ढोने वालों द्वारा किये जाने वाले अमानवीय कार्य पर तीखी टिप्पणी करते हुए कहा– हरिजनों में गरीब सफाई करने वाला या भंगी' समाज में सबसे नीचे खड़ा है, जबकि वह सबसे महत्वपूर्ण है। अपरिहार्य होने के नाते समाज में उसका सम्मान होना चाहिए भंगी' जो समाज की गंदगी साफ करता है उसका स्थान माँ की तरह होता है जो काम एक भंगी दूसरे लोगों की गंदगी साफ करने के लिए करता है वह कार्य अगर अन्य लोग भी करते तो यह बुराई कब की समाप्त हो जाती। संदर्भ–गाँधी वाड्म्य, भाग–54, पृष्ठ–109)

४ स्वच्छता को लेकर गाँधी जी के विचार .

1) महात्मा गाँधी ने कहा था कि राजनीतिक स्वतंत्रता से ज्यादा जरूरी स्वच्छता है।
2) यदि कोई व्यक्ति स्वच्छ नहीं है तो वह स्वस्थ नहीं रह सकता।
3) बेहतर साफ–सफाई से ही भारत के गाँवों को आद्श बनाया जा सकता है।
4) शौचालय को अपने ड्राइंग रूम की तरह साफ रखना जरूरी है।
5) नदियों को साफ रखकर हम अपनी सभ्यता को जिन्दा रख सकते हैं।
6) अपने अंदर की स्वच्छता पहली चीज़ है जिसे पढ़ाया जाना चाहिए। बाकी बातें इसके बाद होनी चाहिए।
7) हर किसी एक को अपना कूड़ा खुद साफ करना चाहिए।
8) मैं किसी को गंदे पैर के साथ अपने मन से नहीं गुजरने दूंगा।
9) अपनी गलती को स्वीकारना झाड़ू लगाने के समान है जो सतह को चमकदार और साफ कर देता है। (न्यूज स्टेट ब्यूरो 2 अक्टूबर, 2018)

गाँधी जी ने धार्मिक स्थलों में फैली गंदगी की ओर भी ध्यान दिलाया था। 3 नवम्बर 1917 को गुजरात राजनैतिक सम्मेलन में उन्होंने कहा था पवित्र तीर्थ स्थान डाकोर यहाँ से बहुत दूर नहीं है। मैं वहाँ गया था। वहाँ की पवित्रता की कोई सीमा नहीं है। मैं स्वयं को वैष्णव भक्त मानता हूँ इसलिये मैं डाकोर जी की स्थिति की आलोचना विशेष रूप से कर सकता हूँ। उस स्थान पर गंदगी की ऐसी स्थिति है कि स्वच्छ वातावरण में रहने वाला कोई व्यक्ति यहाँ 24 घण्टे तक भी नहीं ठहर सकता। इस तरह यंग इण्डिया में 3 फरवरी 1927 को उन्होंने बिहार के पवित्र शहर गया के गंदगी के बारे में भी लिखा और यह इंगित किया कि उनकी हिन्दू आत्मा गया के गंदे नाले में फैली गंदगी और बदबू के खिलाफ बगावती करती है।

गाँधी जी ने सार्वजनिक रूप से स्वच्छता की ओर सबका ध्यान खींचा

29 दिसंबर 1999 को अमृतसर कांग्रेस में एक भाषण में सी एफ एन्ड्रयूज का हवाला दिया। उनके अनुसार यूरोपीय मानते हैं कि बाहर से देखने पर भारतीय बहुत आकर्षक नहीं लगते क्योंकि वह सफाई और स्वच्छता के प्रति बहुत अधिक ध्यान नहीं देते और उसे गैर जरूरती समझते हैं। कांग्रेस के हर सम्मेलन में दिये अपने भाषण में गाँधीजी ने स्वच्छता के मामले को उठाया। अप्रैल 1924 में उन्होंने दाहोद शहर के कांगेस सदस्यों को अच्छी साफ–सफाई रखने के लिए बधाई दी और उन्हें सुझाव दिया कि वह अछूत समझे जाने वाले समुदायों के बीच जायें और उनमें स्वच्छता के प्रति जागरूकता जगायें। 1925 में कानपुर कांग्रेस में सफाई रखने के इंतजामों की भी काफी प्रशंसा की थी।

५ निष्कर्ष:

बापू ने हमें सिर्फ स्वच्छता की कोरी सीख ही नहीं दी, बल्कि इसे स्वयं अपने निजी जीवन में उतार कर प्रेरक उदाहरण भी प्रस्तुत किया। साबरमती आश्रम की साफ–सफाई एवं पेड़–पौधों की देखभाल वह स्वयं ही करते थे। सिर्फ भारत में ही नहीं, बल्कि दक्षिण अफ्रीका में भी उन्होंने साफ–सफाई का प्रेरक उदाहरण प्रस्तुत किया। वहाँ बापू जिस बस्ती में रहते थे, उस बस्ती, उसके आस–पास के क्षेत्र और शहरों की सफाई में उन्होंने बढ़–चढ़ कर योगदान दिया। यह वाकिया उन दिनों का है, जब डरबन की एक भारतीय बस्ती में प्लेग फैला। इस विषम स्थिति में बापू ने न सिर्फ बीमारों की सेवा का बीड़ा उठाया, बल्कि प्लेग के प्रसार को रोकने के लिए वहाँ जमकर सफाई अभियान चलाया। ऐसा करते हुए उन्होंने इस बात की परवाह नहीं की कि वह स्वयं भी प्लेग की चपेट में आ सकते हैं।

एक और प्रेरक उदाहरण देखें, उन दिनों कोलकाता में कांग्रेस का सम्मेलन चल रहा था। इसमें सम्मिलित होने के लिए बापू दक्षिण अफ्रीका से आए थे। कार्यक्रम स्थल पर व्याप्त गंदगी और अस्वच्छता को देखकर वह व्याकुल हो उठे।

उन्होंने आगे बढ़ कर वहाँ स्वयं सफाई का काम शुरू कर दिया। यहाँ तक कि शौचालयों की भी सफाई की और उन्हें ढंका भी। इसके साथ ही उन्होंने सम्मेलन में सम्मिलित होने आए प्रतिनिधियों को दिए अपने भाषण में स्वच्छता के महत्व पर भी प्रकाश डाला।

आज भारत में बहने वाली नदियों की दयनीय दशा किसी से छिपी नहीं है। पावन कहलाने वाली नदियाँ प्रदूषण का दंश झेल रही हैं। नदियों को प्रदूषित करने में हमारा ही योगदान है। बापू ने बहुत पहले ही इस बारे में आगाह करते हुए कहा था कि नदियाँ हमारे देश की नाड़ियों की तरह हैं और हमारी सभ्यता हमारी नदियों की स्थिति पर निर्भर है। यदि हम उन्हें गंदा करना जारी रखेंगे, जिस तरह से हम कर रहे हैं, वह दिन दूर नहीं, जब हमारी नदियाँ जहरीली हो जाएंगी और यदि ऐसा हुआ तो हमारी सभ्यता नष्ट हो जाएगी। हम पर्यावरणीय आपदा के मुहाने पर खड़े हैं, क्योंकि हमने अपनी सबसे पवित्र नदी गंगा को प्रदूषित कर डाला है। बापू ने इस बात को लेकर चिन्ता व्यक्त की थी कि लोग नदियों में गंदगी को बहाते कैसे हैं। यदि तब हमने बापू की बातों पर अमल किया होताए तो आज हमारी नदियों का यह हश्र न होता।

बापू ने स्वच्छता के लिए न सिर्फ व्यावहारिक पहले किया, अपितु व्यावहारिक सीख भी दी। स्वच्छता के लिए उन्होंने जनसहभागिता और जनजागरूकता पर विशेष बल दिया और साफ–सफाई के लिए आत्मप्रेरित प्रयासों को आवश्यक माना। स्वच्छता को सामूहिक जिम्मेदारी बताते हुए उन्होंने यह रेखांकित किया कि इसके लिए प्रत्येक व्यक्ति को चिन्ता करनी होगी और जिम्मेदारी लेनी होगी। स्वच्छता चेतावनियों, कानूनों अथवा अध्यादेश जारी करके इसे हासिल नहीं किया जा सकता। इसे आदत में शामिल करके ही हासिल किया जा सकता है। स्वच्छ भारत अभियान के परिप्रेक्ष्य में बापू का स्वच्छता दर्शन अत्यंत प्रासंगिक है। इस अभियान की सफलता के लिए यह आवश्यक है कि हम बापू के दिखाए रास्ते पर आगे बढ़ें। हम स्वच्छ भारत का लक्ष्य केवल अपनी आत्मा की शुद्धता और इसके बाद अपने आसपास की साफ–सफाई करके ही हासिल कर सकते हैं। यही बापू को हमारी सच्ची श्रद्धांजलि भी होगी।

संदर्भ सूची:

1) शर्मा, विरेन्द्र प्रकाश 'भारत में समाज' रिपोर्ट आफ वर्ल्ड हेल्थ आर्गनाइजेशन, पंचशील प्रकाशन, जयपुर, 2015, पृष्ठ संख्या 330
2) बेन्नी जॉर्ज, निर्मल ग्राम पुरस्कार: ग्रामीण भारत में प्रोत्साहन योजना में एक अनूठी प्रयोग ग्रामीण अध्ययन अंतर्राष्ट्रीय पत्रिका (आईजेआरएस) वॉल्यूम 16 नंबर, पृष्ठ संख्या 36, 1 अप्रैल 2009
3) मृदुला सिन्हा एवं सिन्हा, आर॰ के॰ , स्वच्छ भारत ए क्लीन इंडिया: प्रभात प्रकाशन, पृष्ठ संख्या 24, 6 मई 2016
4) "स्वच्छ भारत चेकलिस्ट" किरण बेदी व पवन चैधरी विस्डम विलेज पब्लिकेशन प्राइवेट लिमिटेड, पृ॰सं॰ 18, 1 जनवरी 2015
5) जोशी एस॰ सी॰, स्वच्छ भारत मिशन एन एसएसमेंट : 1 जनवरी 2017, पृष्ठ संख्या 102
6) यंग इण्डिया, 22 जनवरी, 1930
7) कलैक्टेड वर्क्स आफ महात्मा गाँधी, खण्ड 66, पृष्ठ संख्या 426
8) हरिजन, 12 अप्रैल, 1942
9) वर्मा, श्रीराम, भारतीय राजनीतिक विचारक: कालेज बुक हाऊस, जयपुर पृष्ठ संख्या 430, 1998
10) चतुर्वेदी, मधुकर श्याम, प्रमुख भारतीय राजनीतिक विचारक : कालेज बुक हाऊस, जयपुर, पृष्ठ संख्या 301
11) नगर, पुरूषोत्तम 1999 आधुनिक भारतीय सामाजिक एवं राजनीतिक चिंतन, राजस्थान हिन्दी ग्रंथ अकादमी, जयपुर, पृष्ठ संख्या 430
13) स्वच्छ भारत अभियान, एम॰ के॰ सिंह, सोलर बुक्स, 1 जनवरी 2017, पृष्ठ संख्या 78
14) सिंह पंकज के॰, स्वच्छ भारत समृद्ध भारत, डायमंड बुक्स, 1 अक्टूबर 2015
15) भारत में स्वच्छ अभियान – कार्यनीति और क्रियान्वयन, नेशनल बुक ट्रस्ट, 1 जनवरी 2016
16) राकेश शर्मा निशीथ, महात्मा गाँधी की विचारधारा आज भी प्रासंगिक, 2016, पृष्ठ संख्या 273– 274
17) कुसुम लता चड्ढा, गाँधी वाचन, 2009, पृष्ठ संख्या 147
18) राकेश शर्मा निशीथ, महात्मा गाँधी की विचारधारा आज भी प्रासंगिक, 2016, पृष्ठ संख्या 278– 279
19) हरिदास आर एस सुदर्शन (संपादित), गाँधी विचार, 2011, पृष्ठ संख्या 36
20) स्पीचेज एण्ड राइटिंग्स आफ महात्मा गाँधी, चौथा संस्करण, पृष्ठ संख्या 189